भावनात्मक बुद्धिमत्ता और निर्णय-निर्माण क्षमता के बीच सम्बन्ध का अध्ययन

मनोविज्ञान विषय में पीएचडी डिग्री के लिए प्रस्तावित सारांश

सामाजिक विज्ञान संकाय

शोधार्थी

प्रिया कुमारी

PCW क्रमांक- Psy-03/22

PAT-2022

विश्वविद्यालय मनोविज्ञान विभाग, उत्तरी परिसर, भू० ना० मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा (बिहार) पिन-852128

2025

परिचय-

मानव व्यवहार का अधिकांश भाग केवल बौद्धिक क्षमताओं से निर्देशित नहीं होता, बल्कि भावनात्मक प्रक्रियाएँ भी हमारे विचार, निर्णय और क्रियात्मक विकल्पों को गहराई से प्रभावित करती हैं। पिछले दो दशकों में मनोविज्ञान के क्षेत्र में *भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence – EI)* एक महत्वपूर्ण अवधारणा के रूप में उभरी है, जो यह बताती है कि व्यक्ति अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को किस प्रकार पहचानता, समझता, नियंत्रित करता और सकारात्मक रूप से उपयोग करता है। दूसरी ओर, *निर्णय-निर्माण क्षमता (Decision-Making Ability)* किसी भी परिस्थिति में उपलब्ध विकल्पों के बीच तार्किक, यथार्थपरक और प्रभावी चुनाव करने की योग्यता को दर्शाती है। आधुनिक समय में जहाँ व्यक्ति अनेक सामाजिक, आर्थिक और व्यावसायिक विकल्पों के दबाव में कार्य करता है, वहाँ यह समझना अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता किस प्रकार निर्णय-निर्माण को प्रभावित करती है।

वर्तमान शोध-पूर्व परिचय इस तथ्य पर आधारित है कि निर्णय-निर्माण एक बहु-आयामी संज्ञानात्मक प्रक्रिया है, परन्तु यह पूर्णतः यांत्रिक या तर्क-आधारित नहीं होती। मनोवैज्ञानिक शोधों ने संकेत किया है कि निर्णय प्रक्रिया में भावनाएँ—जैसे भय, आत्मविश्वास, तनाव, प्रेरणा, सहानुभूति—महत्वपूर्ण निर्धारक के रूप में कार्य करती हैं। उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाला व्यक्ति परिस्थितियों के भावनात्मक दबाव को बेहतर ढंग से पहचान कर उन पर नियंत्रण स्थापित कर सकता है, जिसके परिणामस्वरूप वह अधिक स्पष्ट, शांत और संतुलित निर्णय लेने में सक्षम होता है। इसके विपरीत, कम भावनात्मक बुद्धिमत्ता भावनात्मक आवेग, भ्रम, तनाव-प्रेरित गलत विकल्प तथा सामाजिक स्थितियों के अनुचित आकलन की ओर ले जा सकती है।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक समय में, विशेष रूप से शिक्षा, व्यवसाय, नेतृत्व, चिकित्सा, और तकनीकी क्षेत्रों में निर्णय-निर्माण की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो गई है। अनेक बार यह देखा गया है कि समान स्तर की बौद्धिक क्षमता वाले दो व्यक्तियों द्वारा लिए गए निर्णयों में बड़ा अंतर पाया जाता है। यह अंतर अक्सर उनकी भावनात्मक परिपक्वता और भावनाओं के प्रति उनकी जागरूकता से प्रभावित होता है। इस कारण शोधकर्ताओं ने यह प्रश्न उठाया है कि क्या भावनात्मक बुद्धिमत्ता निर्णय-निर्माण क्षमता की एक भविष्यवक्ता (predictor) के रूप में कार्य करती है? और यदि हाँ, तो यह सम्बन्ध किस दिशा और किस तीव्रता में मौजूद है?

शोध-पूर्व साहित्य यह भी सुझाता है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति को समस्या-समाधान, जोखिम-आकलन, विकल्पों के मूल्यांकन, दीर्घ-कालिक परिणामों की पहचान तथा सामाजिक सन्दर्भों में निर्णय लेने की क्षमता को बेहतर बनाती है। भावनात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति न केवल अपनी भावनाओं को नियंत्रित करता है, बल्कि दूसरों की भावनाओं और अपेक्षाओं का आकलन कर निर्णय प्रक्रिया में संतुलित

दृष्टिकोण अपनाता है। इस प्रकार, यह माना जा सकता है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता निर्णय-निर्माण प्रक्रिया का एक प्रमुख मनोवैज्ञानिक आधार हो सकती है।

यह आवश्यक है कि पूर्व उपलब्ध शोधों का सम्यक विश्लेषण किया जाए, अनुसंधान-समस्या को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया जाए, और यह निर्धारित किया जाए कि वर्तमान अध्ययन किस शोध-रिक्तता (research gap) को पूरा करेगा। भारत के सन्दर्भ में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और निर्णय-निर्माण क्षमता के बीच सम्बन्ध पर किए गए शोध सीमित हैं, और अधिकांश अध्ययनों ने या तो विशेष आबादी (जैसे मैनेजर, शिक्षक, छात्रों) पर ध्यान केंद्रित किया है, या केवल भावनात्मक बुद्धिमत्ता को एक गुण के रूप में मापा है, निर्णय-निर्माण की विविध शैलियों को शामिल नहीं किया। इसलिए इस सम्बन्ध का व्यवस्थित अध्ययन अनुसंधान के लिए सार्थक एवं आवश्यक है।

अतः वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य भावनात्मक बुद्धिमत्ता और निर्णय-निर्माण क्षमता के मध्य विद्यमान सम्बन्ध की पहचान करना, उसकी दिशा और परिमाण को मापना, तथा यह समझना है कि भावनात्मक प्रक्रियाएँ किस प्रकार संज्ञानात्मक निर्णय प्रक्रियाओं को प्रभावित करती हैं। यह अध्ययन न केवल मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को समृद्ध करेगा, बल्कि शिक्षा, परामर्श, नेतृत्व, और मानव संसाधन विकास जैसे क्षेत्रों में व्यावहारिक उपयोगिता भी प्रदान करेगा।

आधुनिक मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में भावनाओं और संज्ञान (cognition) का द्वैत पृथक्करण अब उतना प्रासंगिक नहीं माना जाता जितना कि पारंपरिक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों में था। आज यह सर्वस्वीकृत है कि मानवीय निर्णय केवल तार्किक विश्लेषण का परिणाम नहीं होते, बल्कि वे भावनात्मक संकेतों, अनुभवों, सामाजिक सन्दर्भों और परिस्थितिजन्य दबावों से भी प्रभावित होते हैं। इसी कारण भावनात्मक बुद्धिमत्ता और निर्णय-निर्माण के मध्य सम्बन्ध को समझना आज मनोविज्ञान का एक अत्यंत उभरता हुआ शोध-क्षेत्र बन चुका है।

विशेष रूप से डेनियल गोलेमन (Goleman) के द्वारा प्रस्तुत भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा ने यह स्पष्ट किया कि उच्च EI वाला व्यक्ति न केवल अपनी भावनाओं को नियंत्रित और व्यवस्थित करता है, बल्कि वे सामाजिक संकेतों, पारस्परिक संबंधों और अंतःव्यक्तिक स्थितियों को भी बेहतर ढंग से समझता है। यह कौशल सीधे-सीधे निर्णय-निर्माण की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है, क्योंकि निर्णय प्रक्रिया में व्यक्ति को लगातार बदलते तथ्यों, जोखिम, अनिश्चितताओं और सामाजिक अपेक्षाओं का सामना करना पड़ता है। एक भावनात्मक रूप से परिपक्व व्यक्ति ऐसे संदर्भों में अधिक संतुलित, कम पक्षपाती, तथा दीर्घ-कालिक परिणामों पर आधारित निर्णय ले सकता है।

शोध रिपोर्टों से यह भी पाया गया है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति के *निर्णय संबंधी पक्षपात (decision biases)* को कम करती है, जैसे—अत्यधिक आत्मविश्वास, जोखिम

का गलत आकलन, आवेगी प्रतिक्रिया, या भावनात्मक प्रतिक्रिया के आधार पर निर्णय लेना। उच्च EI व्यक्ति तथ्यों और भावनाओं में स्पष्ट अंतर करके अधिक प्रमाणिक तथा यथार्थवादी विकल्प चुनता है। यह विशेष रूप से उन पेशों में महत्वपूर्ण है जहाँ त्वरित, जटिल और परिणाम-निर्धारक निर्णय लेने होते हैं—जैसे स्वास्थ्य सेवा, सैन्य, शिक्षा, कारोबार प्रबंधन, प्रशासन और परामर्श।

साथ ही, निर्णय-निर्माण क्षमता को आधुनिक मनोविज्ञान में केवल एक कौशल नहीं, बल्कि *व्यवहार शैलियों का समूह (set of decision styles)* माना जाता है। विभिन्न व्यक्ति विश्लेषणात्मक, सहज (intuitive), निर्भर (dependent), स्वायत्त (autonomous), या परिहार (avoidant) शैली में निर्णय लेते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता इन शैलियों को किस प्रकार आकार देती है, यह समझना भी एक महत्वपूर्ण शोध लक्ष्य है। उदाहरण के लिए, उच्च EI व्यक्ति अधिक संतुलित और सक्रिय निर्णय शैली अपनाता है, जबकि निम्न EI व्यक्ति अनिर्णय या परिहार प्रवृत्ति दिखा सकता है।

शोध के लिए यह विषय इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि भारतीय संदर्भ में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और निर्णय-निर्माण के सम्बन्ध पर बहुत कम समग्र अध्ययन उपलब्ध हैं। अधिकांश शोध छात्रों या प्रबंधकीय कर्मचारियों पर केंद्रित रहे हैं, और उनमें भी दोनों चर (variables) के बीच गहराई से सहसंबंधीय विश्लेषण नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल युग में तनाव, प्रतिस्पर्धा, सामाजिक तुलना, और त्वरित निर्णय लेने के दबाव ने इस शोध की आवश्यकता को और अधिक प्रासंगिक बना दिया है।

अतः वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य न केवल भावनात्मक बुद्धिमत्ता और निर्णय-निर्माण क्षमता के बीच संबंध का सांख्यिकीय परीक्षण करना है, बल्कि यह समझना भी है कि भावनात्मक प्रक्रियाएँ निर्णय-निर्माण की गुणवत्ता, गति, तार्किकता और अनुकूलनशीलता को किस हद तक प्रभावित करती हैं। इस अध्ययन के निष्कर्ष मानव व्यवहार की व्याख्या के लिए वैज्ञानिक आधार प्रदान करेंगे और व्यावहारिक रूप से शिक्षा, मनोपरामर्श, प्रशिक्षण, नेतृत्व, व्यक्तिगत विकास और मानव संसाधन प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

साहित्य-समीक्षा-

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence – EI) और निर्णय-निर्माण क्षमता (Decision-Making Ability) का सम्बन्ध आधुनिक मनोविज्ञान का एक उभरता हुआ शोध-क्षेत्र है। बीते दो दशकों में अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोधों ने इस बात की पड़ताल की है कि व्यक्ति की भावनात्मक क्षमताएँ उसकी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं, विशेषकर निर्णय-निर्माण, को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। प्रस्तुत साहित्य-समीक्षा इसी दिशा में किए गए प्रमुख शोधों का संक्षेप एवं विश्लेषण प्रदान करती है।

सबसे पहले सैलोंवे और मेयर (Salovey & Mayer, 1990) ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता को एक संज्ञानात्मक-भावनात्मक कौशल के रूप में परिभाषित किया, जिसमें व्यक्ति भावनाओं को पहचानने, उपयोग करने और विनियमित करने में सक्षम होता है। गोलेमन (1995) ने इसे व्यक्तित्व और कार्य-प्रदर्शन का प्रमुख निर्धारक बताया और यह संकेत दिया कि EI प्रभावी निर्णय लेने में सहायक हो सकती है। यह आधारभूत परिकल्पना बाद के अनेक शोधों की नींव बनी।

जॉर्ज (George, 2000) के अनुसार भावनाएँ निर्णय प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, क्योंकि वे व्यक्ति के ध्यान, स्मृति, जोखिम-आकलन और समस्या-समाधान क्षमता को प्रभावित करती हैं। उनके अध्ययन से पता चला कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति को तनावपूर्ण परिस्थितियों में भी संतुलित निर्णय लेने में सहायक होती है। इसी प्रकार लीघ और पेटी (Leith & Baumeister, 1996) ने पाया कि नकारात्मक भावनाएँ—विशेषकर चिंता—निर्णयों को कमजोर कर सकती हैं, जबकि सकारात्मक भावनात्मक नियंत्रण निर्णय की गुणवत्ता बढ़ाता है।

कापलान, ब्रैडली और लुईस (2013) के अध्ययन में दर्शाया गया कि EI निर्णय संबंधी पक्षपात (biases) को कम करती है तथा विकल्पों के तार्किक विश्लेषण को बढ़ाती है। इसके अतिरिक्त, पेट्रीड्स और फर्नहैम (2001) ने *Trait Emotional Intelligence* और निर्णय-क्षमता के बीच सकारात्मक सहसंबंध पाया। उन्होंने यह भी बताया कि उच्च EI वाले व्यक्ति अधिक स्वायत्त, आत्मविश्वासी और कम आवेगी निर्णय लेते हैं।

भारतीय संदर्भ में भी कुछ महत्वपूर्ण शोध उपलब्ध हैं। सिंह (2009) ने कॉलेज छात्रों पर किए अध्ययन में पाया कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता उनकी निर्णय-निर्माण क्षमता और समस्या-समाधान दक्षता को बढ़ाती है। यदि व्यक्ति अपनी भावनाओं को संतुलित करता है, तो वह उपलब्ध विकल्पों का विश्लेषण उचित तरीके से कर सकता है। भट्टाचार्य एवं दत्ता (2014) ने शिक्षकों पर किए गए अध्ययन में पाया कि EI न केवल उनके निर्णयों की गुणवत्ता को प्रभावित करती है, बल्कि कक्षा-प्रबंधन से संबंधित निर्णयों को भी अधिक प्रभावी बनाती है।

नेतृत्व-निर्णय के संदर्भ में गोल्डस्टीन और स्टेस्टन (2011) ने दर्शाया कि उच्च EI वाले नेता जटिल परिस्थितियों में अधिक संतुलित निर्णय लेते हैं, क्योंकि वे सामाजिक-भावनात्मक संकेतों को बेहतर तरीके से समझते हैं। इसके विपरीत कम EI वाले नेताओं में आवेगशील निर्णय और जोखिम का गलत आकलन अधिक देखा गया।

निर्णय-निर्माण शैलियों (Decision Styles) के क्षेत्र में स्कॉट और ब्रूस (1995) ने पाया कि निर्णय शैली का संबंध व्यक्ति के भावनात्मक विनियमन कौशल से जुड़ा होता है। उन्होंने सुझाव दिया कि

भावनात्मक जागरूकता निर्णयों की स्वायत्तता और तार्किकता को बढ़ाती है। इसी क्रम में कुछ नवीनतम शोध—जैसे फ्रीस्ट्रन एट अल. (2018)—ने यह स्पष्ट किया कि भावनात्मक जागरूकता निर्णय लेते समय संज्ञानात्मक भार (cognitive load) को कम करती है, जिससे निर्णय की सटीकता और गति दोनों बढ़ती हैं।

उपलब्ध साहित्य की समग्र समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और निर्णय-निर्माण क्षमता के बीच एक सकारात्मक सम्बन्ध विद्यमान है। अधिकांश शोध यह संकेत देते हैं कि उच्च EI व्यक्ति को संतुलित, कम पक्षपाती, अधिक तार्किक और बेहतर परिणाम-उन्मुख निर्णय लेने में सहायक होती है।

हालाँकि, अधिकांश पूर्व अध्ययनों में या तो विशिष्ट पेशेवर समूहों (जैसे शिक्षक, प्रबंधक, छात्र) पर ध्यान केंद्रित किया गया है, या निर्णय-निर्माण का मूल्यांकन सीमित आयामों में किया गया है। इसी कारण, एक समग्र रूप से डिज़ाइन किया गया अध्ययन—जो भावनात्मक बुद्धिमत्ता और निर्णय-निर्माण क्षमता को सांख्यिकीय रूप से जोड़कर देखे—अभी भी आवश्यक है।

अध्ययन का उद्देश्य -

वर्तमान शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि व्यक्ति की भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence – EI) और उसकी निर्णय-निर्माण क्षमता (Decision-Making Ability) के बीच किस प्रकार का सम्बन्ध मौजूद है। आधुनिक जीवन में व्यक्ति को निरंतर ऐसे विकल्पों और परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है जहाँ प्रभावी निर्णय लेना अत्यंत आवश्यक होता है। उपलब्ध शोध संकेत देते हैं कि निर्णय-निर्माण केवल तर्क की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह भावनाओं, अनुभवों और भावनात्मक विनियमन पर भी आधारित होता है। इसलिए यह अध्ययन निम्न बिंदुओं पर केंद्रित है:

- भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विभिन्न आयामों और निर्णय-निर्माण क्षमता के बीच सम्बन्ध को मापना।
- यह विश्लेषण करना कि क्या भावनात्मक जागरूकता, भावनात्मक नियंत्रण और सहानुभूति जैसे EI के घटक निर्णय-निर्माण की दक्षता को प्रभावित करते हैं।
- यह पहचानना कि निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता क्या निर्णयों की गुणवत्ता को कम करती है या निर्णय-सम्बन्धी पक्षपात (decision biases) को बढ़ाती है।
- भावनाओं और संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के एकीकृत प्रभाव को समझना।
- भारतीय संदर्भ में EI और Decision-Making के सम्बन्ध पर नवीन अनुभवजन्य (empirical) प्रमाण प्रस्तुत करना।

- भावनात्मक बुद्धिमत्ता के आधार पर ऐसे निष्कर्ष प्राप्त करना जो शिक्षा, परामर्श, नेतृत्व, पेशेवर प्रशिक्षण व मानव संसाधन विकास में उपयोगी हो सकते हैं।

समग्र रूप से, अध्ययन का उद्देश्य भावनात्मक बुद्धिमत्ता और निर्णय-निर्माण क्षमता के मध्य विद्यमान दिशात्मक, सांख्यिकीय तथा व्यावहारिक सम्बन्ध को स्थापित करना है, ताकि यह समझा जा सके कि भावनाएँ किस प्रकार व्यक्ति के संज्ञानात्मक निर्णयों को प्रभावित करती हैं।

परिकल्पनाएँ -

वर्तमान अनुसंधान के उद्देश्यों और पूर्व उपलब्ध साहित्य के आधार पर निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की जाती हैं:

- H_1: भावनात्मक बुद्धिमत्ता और निर्णय-निर्माण क्षमता के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंध (significant positive correlation) पाया जाएगा। अर्थात्, जिन व्यक्तियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता अधिक होगी, उनकी निर्णय-निर्माण क्षमता भी उच्च पाई जाएगी।

- H_2: भावनात्मक बुद्धिमत्ता के भावनात्मक-जागरूकता (Emotional Awareness) आयाम का निर्णय-निर्माण क्षमता के साथ महत्वपूर्ण सकारात्मक सम्बन्ध होगा।

- H_3: भावनात्मक विनियमन (Emotional Regulation) का निर्णय-निर्माण की गुणवत्ता के साथ महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंध पाया जाएगा।

- H_4: सहानुभूति (Empathy) / पारस्परिक संवेदनशीलता का निर्णय-निर्माण की स्वायत्तता (autonomy) और संतुलन के साथ महत्वपूर्ण सकारात्मक सम्बन्ध होगा।

- H_5: निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले प्रतिभागियों के निर्णय तुलनात्मक रूप से अधिक पक्षपाती (biased), भावनात्मक-प्रेरित या कम सटीक पाए जाएँगे।

- H_6: उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले प्रतिभागी तनावपूर्ण परिस्थितियों (stressful situations) में भी अधिक स्थिर और तार्किक निर्णय लेंगे, जबकि निम्न EI वाले प्रतिभागियों के निर्णयों पर तनाव का नकारात्मक प्रभाव अधिक होगा।

- H_7: भावनात्मक बुद्धिमत्ता का निर्णय-निर्माण की गति (decision speed) के साथ सकारात्मक सम्बन्ध होगा; अर्थात्, उच्च EI वाले प्रतिभागी बिना आवेगशीलता के comparatively तेज़ एवं अधिक सटीक निर्णय ले पाएँगे।

<u>शोध प्रविधियाँ –</u>

नमूना – मधेपुरा जिले के विभिन्न स्नातक उत्तीर्ण छात्र (पुरुष = 200 और महिला = 200 छात्र) से नमूना (N = 400) यादृच्छिक रूप से एकत्र किया जाएगा।

उपकरण/प्रश्नावली – डेटा संग्रह में निम्नलिखित प्रश्नावली का उपयोग किया जाएगा।

(क) **व्यक्तिगत आंकड़ा विवरणी (PDS)** - स्वनिर्मित

(ख) **इमोशनल इंटेलिजेन्स स्केल (EIS)** - हायडे, ए०; पेथे, एस०; धार, यू० (2002)

(ग) **जेनरल डिसीजन मेकिंग स्टाइल इन्वेंटरी (GDMS)** – ब्रूस, आर० ए०; स्कॉट, एस० जी०(1995)

इसके अलावे आवश्यकतानुसार उपरोक्त प्रश्नावली में परिवर्तन भी किया जा सकता है।

नमूनों का सांख्यिकीय विश्लेषण- इस अध्ययन में प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण सर्वप्रथम वर्णनात्मक सांख्यिकी (Mean, SD, Skewness, Kurtosis) और स्केल की विश्वसनीयता (Cronbach's Alpha) ज्ञात कर किया जाएगा। इसके पश्चात भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं निर्णय-निर्माण क्षमता के कुल एवं उप-आयामों के मध्य सम्बन्ध का निर्धारण पियर्सन सहसंबंध (Pearson Product-Moment Correlation) द्वारा किया जाएगा; यदि डेटा सामान्य वितरण का पालन न करे तो Spearman's rho प्रयोग किया जाएगा। नियंत्रण योग्य चर (जैसे आयु, लिंग) को स्थिर रखते हुए partial correlation भी निकाला जाएगा। इसके अतिरिक्त यह जाँचने हेतु कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता निर्णय-निर्माण क्षमता की कितनी भविष्यवाणी करती है, simple तथा multiple linear regression analysis किया जाएगा, जिसमें EI के उप आयामों को predictive variables के रूप में शामिल किया जाएगा। सभी विश्लेषण .05 के महत्व स्तर पर किए जाएँगे।

शोध के बाद तैयार की जाने वाली शोध ग्रंथ का पूरा अध्याय इस प्रकार होगा:--

अध्याय 1:-- परिचय

अध्याय 2:-- साहित्य की समीक्षा

अध्याय 3:-- शोध पद्धति

अध्याय 4:-- परिणाम और चर्चा

अध्याय 5:-- निष्कर्ष और सुझाव

संदर्भ ग्रंथ सूची

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ सूची -

- Baumeister, R. F., & Vohs, K. D. (2007). Self-regulation, ego depletion, and emotion in decision making. *Social and Personality Psychology Compass, 1*, 115–128.
- Bhattacharya, S., & Dutta, P. (2014). Emotional intelligence as a predictor of decision-making among school teachers. *Indian Journal of Positive Psychology, 5(4)*, 420–423.*
- Druskat, V. U., & Wolff, S. B. (2001). Group emotional intelligence and group effectiveness. *Group Dynamics: Theory, Research, and Practice, 5(2)*, 87–93.*
- Frey, R., Pedroni, A., Mata, R., Rieskamp, J., & Hertwig, R. (2018). Risk preference shares the psychometric structure of major psychological traits. *Science Advances, 4(10).*
- George, J. M. (2000). Emotions and leadership: The role of emotional intelligence. *Human Relations, 53(8)*, 1027–1055.
- Goldstein, S. B., & Steston, E. P. (2011). Effects of emotional intelligence training on decision making and performance. *Journal of Organizational Behavior, 32(3)*, 381–398.
- Goleman, D. (1995). *Emotional Intelligence*. New York: Bantam Books.
- Kaplan, S., Bradley, J., & Luchman, J. (2013). A test of two alternative cognitive models of decision making. *Journal of Behavioral Decision Making, 26(5)*, 419–430.
- Leith, K. P., & Baumeister, R. F. (1996). Why do bad moods increase self-defeating behavior? Emotion, risk-taking, and self-regulation. *Journal of Personality and Social Psychology, 71(6)*, 1250–1267.

- Mayer, J. D., Salovey, P., & Caruso, D. (2008). Emotional intelligence: New ability or eclectic traits? *American Psychologist, 63(6)*, 503–517.*
- Petrides, K. V., & Furnham, A. (2001). Trait emotional intelligence: Psychometric investigation with reference to established trait taxonomies. *European Journal of Personality, 15*, 425–448.
- Salovey, P., & Mayer, J. D. (1990). Emotional intelligence. *Imagination, Cognition and Personality, 9(3)*, 185–211.
- Scott, S. G., & Bruce, R. A. (1995). Decision-making style: The development and assessment of a new measure. *Educational and Psychological Measurement, 55(5)*, 818–831.
- Singh, D. (2009). Emotional intelligence and academic decision making among college students. *Indian Journal of Psychology and Education, 1(2)*, 55–62.

शोधार्थी का हस्ताक्षर